eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 04, April 2023

भारतीय संस्कृति एवं बौद्ध धर्मः एक अध्ययन

डॉ0 श्याम कुमार चौधरी[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र महिला पी0जी0 कॉलेज, बहराइच, उ0प्र0

Received: 20 April 2023, Accepted: 28 April 2023, Published with Peer Reviewed on line: 30 April 2023

Abstract

यह अध्ययन भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति को नैतिकता, अहिंसा, करुणा, मध्यम मार्ग तथा मानवतावाद जैसे मूल्यों से समृद्ध किया। बुद्ध के उपदेशों ने सामाजिक समता, जाति–भेद के विरोध तथा आध्यात्मिक चेतना को बल प्रदान किया, जिससे भारतीय समाज में वैचारिक परिवर्तन आया। कला, स्थापत्य, साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में बौद्ध प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है, जैसे स्तूप, विहार, जातक कथाएँ और पाली साहित्य। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि बौद्ध धर्म न केवल भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, बल्कि उसकी उदार, सहिष्णु और नैतिक परंपराओं के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समकालीन संदर्भ में भी बौद्ध विचारधारा वैश्विक शांति, सह–अस्तित्व और नैतिक जीवन के लिए प्रासंगिक बनी हुई है।

कुंजी शब्द– भारतीय संस्कृति, बौद्ध धर्म, अहिंसा, करुणा, मध्यम मार्ग, नैतिकता, सामाजिक समता, मानवतावाद

Introduction

अगर हम भारतीय संस्कृति की बात करें तो भारतीय संस्कृति अपने आप में एक महत्पूर्ण स्थान रखती है क्योंकि यह विश्व की प्राचीन संस्कृति है। भारत में समय समय पर अनेक धर्मो का उदय होता रहा है और मे धर्म अपनी छाप भारतीय संस्कृति पर छोड़ते रहे है। और इसी क्रम में बौद्ध धर्म ने भी भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। बौद्ध धर्म का उदय लगभग छठी शताब्दी ई० तक भारतीय प्राचीन वैदिक धर्म अनेक दोषो से परिपूर्ण हो गया था। धर्म के मूल भूत सिद्धान्तों की नीव दहल चुकी थी और उसमें अनेक कर्मकाण्डो का समावेश हो गया था। चारों ओर अन्ध विश्वास का राज्य था देवी देवतओं को प्रसन्न करने के लिए नरबलि तथा पुशबलि बहुत ही आसन चीज बन गई थी भगवान एंव मनुष्य के बीच पुरोहित व्यवस्था स्थापित हो चुकी थी इस समय ब्राह्मणों को विशेष महत्व प्रदान किया जाता था। स्त्रियों एंव शूद्रो को ह्रीन दृष्टि से देखा जाता था। शिक्षा पर से अन्य जातियों के अधिकार उठ गये और उस पर केवल ब्राह्मणों के अधिकार रह गये जन सामान्य ब्राह्मणो के द्वारा निर्मित नियमों से तग आ गया अत एवं इन नियमों में सुधार की जरूरत समझी जाने लगी।

इसी समय भारत ही नही विश्व के सौभाग्य से उत्तर भारत के कपिल वस्तु राज्य में 563 ई० पू० बैशाख पूर्णिमा के दिन राजा सुद्धोधन के यहाँ महामाया की कोख से लुम्बनी में सिद्वार्थ का जन्म हुआ जो बाद में गौतम बुद्ध कहलाये महात्मा बुद्ध ने मनुष्य तथा भगवान के बीच पुरोहित की इस मध्यस्यता तथा द्विसत्तात्मक यज्ञो का विरोध किया भगवान बुद्ध जी ने अंहिसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसके परिणाम स्वरूप दया भाव की उत्पत्ति हुई तथा ब्राहम्ण धर्म प्रभावित हुआ बौद्ध धर्म का उदय हुआ तथा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 04, April 2023

उसने पूर्ण रूप से अहिंसा के सिद्धान्त को गृहण कर लिया। महत्मा बुद्ध ने आचरण की पवित्रता को परमावश्यक बतलाया और उन्होने नैतिक आदर्शों पर अधिक बल दिया। उच्च नैतिक आदर्शों के अनुकरण करने के परिणाम स्वरूप जनता का नैतिक स्तर श्रेष्ठ हो गया तथा बौद्विक धर्म पर भी बौद्ध धर्म के उच्च आदर्शों का प्रभाव पड़ा।

भारत में बौद्ध युग से पूर्व मूर्ति पूजा का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। आर्यों ने कभी भी मूर्ति पूजा नहीं की वैदिक संस्कृति में हमेशा प्रकृति और मूल आदि को महत्व दिया गया भारत में सर्वप्रथम महायानी बौद्धों ने मूर्ति पूजा प्रारम्भ की। उन्होनें महात्मा बुद्ध की प्रतिमा स्थापित करके उसकी उपासना आरम्भ की। महायानी बौद्धों का अनुसरण करके ब्राम्हण वर्ग ने भी मूर्ति पूजा प्रारम्भ कर दी। मूर्तिया स्थापित करने के विचार से मन्दिरों का निर्माण प्रारम्भ किया गया परिणाम स्वरूप कालान्तर में भारत में मूर्ति पूजा का अत्यधिक प्रचार किया गया। परिणाम स्वरूप कालान्तर में भारत में मूर्ति पूजा का अत्यधिक प्रचार हो गया इस प्रकार मूर्ति पूजा बौद्ध धर्म की ही हिन्दू धर्म को देन है।

बौद्ध धर्म के पूर्व तक साधू सन्यासियों के रहने की कोई व्यवस्थित व्यवस्था न थी। वे स्वतन्त्र रूप से जंगलों में निवास करते थे और वही जा कर विद्यार्थी उनसे शिक्षा प्राप्त करते थे। बौद्ध धर्म ने भारत में सामाजिक और राजनैतिक एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत में महत्मा बुद्ध के जन्म के पूर्व तक चारों ओर असमानता और असहिष्णुता का अन्त किया। महत्मा बुद्ध प्रथम व्यक्ति थे जिन्होनें असमानता और असहिष्णुता थी। महत्मा बुद्ध प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने असमानता और सहनशीलता का उपदेश दिया था। उन्होनें कर्म को अधिक महत्व दिया था उनका कहना था जातिमत पूछ आचरण पूछ। उन्होंने स्त्रियों एवं पुरुषों में कोई अन्तर नही रक्खा, वरन स्त्रियों को भी पुरुषों के समान ही समझा। इस प्रकार बौद्ध धर्म के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज में समानता और शहनशीलता की भावना का उदय हुआ बौद्ध काल में स्थापत्य कला, मूर्ति कला, चित्रकला आदि का आश्चर्य जनक विकास हुआ। इस काल में भारी संख्या में कलाकृतियों का निर्माण हुआ जिसको आज भी विश्व के अनेक अजायब घरो में देखा जा सकता है।

बौद्ध अनुयायियों में धर्म प्रचार करने की भारी इच्छा थी। प्रारम्भ में उन्होने देश में बौद्ध धर्म का प्रचार करके देश को एकता प्रदान की। इसके उपरान्त उन्होने विदेशो में बौद्ध धर्म तथा संस्कृति का प्रचार किया। वे शान्ति का सन्देश लेकर चीन मंगोलिया, मंचूरिया, मलावा, कोरिया, ब्रम्हा, सुमात्रा तथा लंका आदि देशों में गये। इस प्रकार बौद्ध धर्म के साथ साथ भारतीय संस्कृति का भी प्रचार प्रसार बढ़ा तथा भारत भूमि को पवित्र तथा तीर्थ स्थान माना जाने लगा।

सन्दर्भ सूचीः–

1– गौतम, प्रो० एस०एल०, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समसामायिक समस्याएँ, आलोक प्रकाश, अमीनाबाद, लखनऊ।
2– अग्रवाल, जे०सी०, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, अगरा।
3– शर्मा प्रभा, त्यागी एम०पी०, शैक्षिक प्रबन्धक एवं विद्यालय संगठन, अनुप्रकाशन, जयपुर।
4– प्राचीन भारतीय कला एवं वस्तु, 2002 ई०।
5– वैदिक सहिंताओं में विविध विधाएं।